Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

'राम की शक्तिपूजा' कविता में निराला के राम

नटवर भाम्बी*

* सहायक आचार्य (हिन्दी) श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय, कल्याणलोक जावदा, निम्बाहेड़ा (राज.) भारत

शोध सारांश – सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'राम की शक्तिपूजा' में राम का स्वरूप पारंपरिक दैवीय मर्यादाओं से मुक्त होकर एक गहरे मानवीय और बहुआयामी चरित्र के रूप में उभरता है। निराला आधुनिक चेतना से प्रेरित होकर ईश्वर का मानवीकरण करते हैं, जहाँ राम संशय, भय, पराजय-बोध, आत्मग्लानि और असमर्थता जैसी मानवीय मन:स्थितियों से गुजरते हैं। वही राम कवि निराला के अपने जीवन-संघर्ष, आत्मपीड़ा और असफलताओं के प्रतीक भी बन जाते है। कविता में सीता-मुक्ति के माध्यम से नारी-मुक्ति की चेतना व्यक्त होती है और राम एक संवेदनशील पति के रूप में सामने आते हैं। साथ ही राम राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के नायक, विशेषत: गांधी, के प्रतीक रूप में भी देखे जा सकते हैं, जहाँ शक्ति का प्रश्न नैतिकता से जुड़ता है। राम-रावण संघर्ष सत्य-असत्य और धर्म-अधर्म के शाश्वत द्वंद्व का रूप ले लेता है। इस प्रकार निराला के राम 'नवीन पुरुषोत्तम' है, जो आधुनिक, दार्शनिक और प्रतीकात्मक अर्थों से समृद्ध है।

शब्द कुंजी – संशय, पराजय-बोध, आत्मग्लानि, शक्ति-साधना, आत्मसंघर्ष, नारी-मुक्ति, राष्ट्रीय चेतना, रामत्वद्दरावणत्व, मानवीकरण, धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य ।

प्रस्तावना – 'राम की शक्तिपूजा' निराला द्वारा 1936 ई. में रचित उनकी अमर काव्य कृति है, जो कि उनकी कीर्ति का एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ रही है। यह रचना उनके कविता संग्रह 'अनामिका' में संग्रहित हैं। 'राम की शक्तिपूजा' 312 पंक्तियों की एक लंबी आख्यानपरक कविता है, जिसमें कृतिवास रामायण के 'राम-रावण युद्ध' प्रसंग को आधार बनाया गया है। आख्यान पर कविता होने पर भी कवि निराला ने अपनी सृजनात्मक व रचनात्मक प्रतिभा द्वारा कविता में विभिन्न भावों व संवेदनाओं की संभावनाओं की सशक्त अभिव्यक्त की है। कविता में राम की समस्या न सिर्फ सार्वकालिक है, बल्कि वह युगीन प्रश्नों से भी टकराती हैं। जैसे- शक्ति का अन्याय के पक्ष होना, राष्ट्रिय स्वाधीनता संग्राम, नारी मुक्ति तथा आधुनिक मध्यम वर्गीय व्यक्ति की समस्या। सिर्फ 312 पंक्तियों की यह कविता अपनी अर्थ बहुलता, भाव वैवध्य और प्रतीकात्मकता के कारण राम के चरित्र का एक खंडकाव्य होते हुए भी महाकाव्यात्मक रूप को धारण करती है। पाठक व समीक्षक जैसे-जैसें अपने भावों के अनुसार पंक्तियों के अर्थ को बदलता है वैसे-वैसे कविता की संवेदना और उस संवेदना को अभिव्यक्त करने वाले राम का चरित्र भी बदल जाता है। इस शोध में हम नायक राम के इसी बदलते हुवे चरित्र को ही देखने का प्रयास करेंगे। उदाहरण के लिए कुछ समीक्षक कविता में निराला के राम को मानवीय राम बताते हैं, तो कुछ समीक्षक उन्हें निराला के ही व्यक्तित्व को अभिव्यक्त कराने वाले चरित्र के रूप में देखते हैं। कुछ राम को शक्ति की मौलिक कल्पना का नायक बनाते हैं, तो कुछ विद्धान राम की 'शक्तिपूजा' कविता को तात्कालिक परिस्थितियों से जोड़कर राष्ट्रीय स्वाधीन आंदोलन के प्रमुख नेता गांधी के चरित्र की ही अभिव्यक्ति राम में मानते हैं। कुछ अन्य समीक्षक निराला के राम की तुलना तुलसी के राम, कृतिवास रामायण के राम व वाल्मीकि के राम से करते है। राम के चरित्र द्वारा इन विभिन्न प्रतीकों को धारण करने वाली संभावना को देखते हुए कुछ चंद पंक्तियाँ मेरी बुद्धि में कचोटती है-

'मुझ में राम, तुझ में राम,
घट घट में राम,
यह है अपने-अपने राम'(स्व-रचित)

'राम की शक्तिपूजा' में राम का मानवीय रूप- निराला आधुनिक कवि है इसीलिए उनकी भक्ति भावना में ईश्वर और मानव का संबंध आधुनिक चेतन से संयुक्त प्रभावित है। आधुनिकता में मनुष्य का ईवरीकरण नहीं, ईश्वर का मानवीकरण होता है। निराला अपने प्रिय कवि तुलसीदास की तरह राम को आराध्य बनाते हैं, किंतु उनमें ईश्वर की मात्रा बेहद कम करते हुए उन्हें ज्यादा से ज्यादा मानवीय रूप प्रदान करते हैं। वे देवत्व का चोला त्याग कर राम को उदात्ता मानव के रूप में स्थापित करते है। उनमें बहुत-सी मानवीय कमजोरियाँ जैसें- संशय, भय, विकलता, असामर्थ्य बोध, पराजय बोध, संत्रास तथा आत्मधिक्कार आदि मनरूस्थितियाँ दिखाई देती है। कविता के आरम्भ से ही राम को संशय हे, कि वे युद्ध में विजय हो पाएंगे या नही। अन्य राम कथाओं में विपरीत परिस्थियों में राम विचलित होते है, लेकिन डरते नही है, परन्तु यहाँ पर राम डरते ही नही स्वयं को कमजोर भी पाते है-

'स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर-फिर संशय,
रह-रह उठना जग जीवन में रावण-जय-भय,
जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपु-दम्य-श्रान्त,
एक भी, अयुत-लक्ष में रहा जो दुराक्रान्त,
कल लड़ने को हो रहा विकल वह बार-बार,
असमर्थ मानता मन उद्यत हों हार-हार'[1]

रावण के आतंक के कारण राम भयभीत भी होते है। कविता के अंत में इंदीवर न मिलने पर भी वे घबरा जाते है। अब क्या होगा? क्या साधना खंडित हो जाएगी? जैसें प्रश्न उन्हें परेशान करने लग जाते है-

'द्विप्रहर रात्रि, सरकार हुई दुर्गा छिपकर,
हँस उठा ले गई पूजा का प्रिय इंदीवर'[2]

अपने व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति– निराला छायावादी कवि है और छायावादी कवियों की एक महत्वपूर्ण विशेषता रही है अपने काव्य में आत्म–वैयक्तित्व की अभिव्यक्ति। दूधनाथ सिंह का मानना है कि 'राम की शक्तिपूजा' कविता में निराला ने राम के चरित्र के माध्यम से अपने ही जीवन संघर्षों को प्रतीकात्मक रूप से अभिव्यक्ति दी है। सरोज स्मृति में जो समस्याएँ हैं उन्हीं का अगला चरण 'राम की शक्तिपूजा' में दिखाई देता है। कविता की शुरुआत–'रवि हुआ अस्त' अर्थात अंधेरे की स्थिति से हुई है यह अंधेरा एक स्तर पर निराला के जीवन का अंधेरा ही है। इस अंधेरे में आर्थिक अभाव के कारण पुत्री सरोज का इलाज न करा पाना, उत्कृष्ट रचनाएँ लिखने के बाद भी साहित्य के क्षेत्र में यथा–स्थान न मिल पाना। यह निराशा वही है जो सरोज स्मृति के अंतिम हिस्से में दिखाई देती है–'दुरूख ही जीवन की कथा रहीध्क्या कहूं आज जो नहीं कहीं' जीवन के संघर्षों से जर्जर जैसा व्यक्तित्व सरोज–स्मृति में निराला का था, वैसा ही 'राम की शक्तिपूजा' में राम का है। संघर्ष से जर्जर राम व निराला एक जैसे हैं–

'आते थे मुझ पर तुले तूर्ण।
देखता रहा मैं खड़ा अपल,
वह शर–क्षेप वह रण कौशल।[3]

शक्तिपूजा के राम निराला को ही अभिव्यक्त करते है, इसका एक अन्य प्रमाण दूधनाथ सिंह के अनुसार यह भी है कि इस कविता में राम की शारीरिक संरचना व सौंदर्य वैसा ही बताया गया है जैसा निराला का है। निराला शारीरिक दृष्टि से विशालकाय थे, उनकी लंबी जटाए व संपूर्ण देह–दृष्टि ही राम के इस वर्णन में साकार हो उठी है–

'दृढ़ जटा–मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल,
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल,
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार'[4]

इतना ही नहीं शक्तिपूजा के राम शक्ति की साधना योग प्रक्रिया के माध्यम से कर रहे हैं, क्योंकि निराला स्वयं योग मार्ग से जुड़े हुए हैं इससे संकेत मिलता है कि उन्होंने अपने ही व्यक्तित्व का आरोप राम पर किया है। बच्चन सिंह भी कहते है कि–'आर्थिक, गार्हस्थिक, सामाजिक तथा साहित्यिक युद्ध में पराजित निराला अपनी मनोदशा और पराजय बोध को फैकने के लिए नये मार्ग का अन्वेषण कर रहे थे।'[5] (हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह)

सीता मुक्ति व नारी मुक्ति के नायक राम–समीक्षाकार डॉ. नंदकिशोर नवल का मानना है कि 'राम की शक्तिपूजा' कविता का केंद्रीय भाव सीता की मुक्ति और सीता के प्रतीक के माध्यम से नारी मुक्ति है। निराला गार्हस्थिक प्रेम के कवि हैं। उनके संपूर्ण साहित्य में गार्हस्थिक प्रेम की प्रतिबद्धता के कहीं उदाहरण देखने को मिलते हैं जैसे– पंचवटी प्रसंग, तुलसीदास तथा सरोज स्मृति के भी कुछ अंश। शक्तिपूजा की मूल संवेदना इसी कड़ी का अगला चरण है। वे सरोज स्मृति में पुत्री की मुक्ति करते हैं, तो 'राम की शक्तिपूजा' में पत्नी की मुक्ति, उनकी नारी–मुक्ति चेतना का सर्वोच्च चरण है। न सिर्फ कथानक के उद्देश्य के रूप में बल्कि कथानक के हर मोड़ पर सीता राम कि स्मृति में उपस्थित है। यूँ प्रतीत होता है कि राम के पास न होते हुए भी राम के शिविर की सभी घटनाओं का संचालन सीता ही कर रही है। रचना के अंतिम हिस्से में माँ दुर्गा अंतिम इंदीवर उठाकर ले गई है और रिक्त स्थान को देखकर राम आत्म–अधिकार की अवस्था में पहुंच गए हैं। वह कहते हैं –

'धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिये सदा ही किया शोध।
जानकी हाय ! उद्धार प्रिया का हो न सका'[6]

घोर विफलता तथा आत्मअधिक्कार की अवस्था में व्यक्ति सबसे पहले उस लक्ष्य की बात करता है जो सबसे महत्वपूर्ण होते हुए भी पूरा नहीं हो पता है। आत्म अधिकार के तुरंत बाद– 'जानकी हाय ! उद्धार प्रिया का हो न सका' कथन का राम के मुख से निकलना इस बात का प्रमाण है कि सीता की मुक्ति ही कविता का केंद्रीय उद्देश्य है यह मुक्ति निराला ने राम के प्रतीक के माध्यम से कराई है। डॉ. नंदकिशोर नवल कहते है कि–'सच्चाई यह है कि यह कविता वैसे ही पत्नी प्रेम कि कविता है,जैसे सरोज स्मृति पुत्री–प्रेम की कविता है'।[7] (निराला काव्य की छवियाँ : नन्द किशोर नवल)

राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के नायक के रूप में राम–छायावादी कवियों पर आक्षेप है कि वह राष्ट्रीय आंदोलन के सघनतम काल में उपस्थित होकर भी उससे कटे रहे, किंतु सत्य है कि 'राम की शक्तिपूजा' जैसी कविता में राष्ट्रीय आंदोलन का रोजनामचा चाहे न दिखे, उसके मूल्य हर मोड़ पर दिखते हैं। कालजयी कविता की यही पहचान होती है कि वह अपने समय के संदर्भ में सीमित नहीं होती बल्कि उन्हें काल मुक्त कर देती है। शक्तिपूजा में राष्ट्रीय चेतना इसी स्तर पर उपस्थित है। कविता में राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित कई प्रश्न प्रतीकात्मक रूप में उपस्थित है। कविता की मूल समस्या है–'अन्य जिधर है उधर शक्ति'। शक्ति रावण अर्थात अंग्रेजों के पक्ष में है, जिन्होंने साधना से उसे अपने वशीभूत कर लिया है। वह नैतिक पक्ष नहीं है यही राम अर्थात राष्ट्र नायक की चिंता है–'रावण अधर्मरत भी अपना, मैं हुआ अपर'। यहाँ प्रतीकात्मक रूप में राष्ट्रीय आंदोलन के नेता गांधी का चरित्र है जो राम के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। गांधी के विभिन्न आंदोलन असफल होने के बाद वे शक्ति की नई मौलिक कल्पना करने का प्रयास करते हैं । 'सविनय अवज्ञा' आंदोलन, असहयोग आंदोलन की असफलता ने राष्ट्रीय नेतृत्व के मन में गौर निराशा, संशय और पराजय–बोध भर दिया है । गांधी व उनकी वाहिनी के अन्य सदस्य राम की तरह ही चिंतित है–

'स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर–फिर संशय,
रह–रह उठना जग जीवन में रावण–जय–भय,
जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपु–दम्य–श्रान्त,
एक भी अयुत–लक्ष में रहा जो दुराक्रान्त,
कल लड़ने को हो रहा है विकल वह बार–बार,
असमर्थ मानता मन उद्यत हों हार–हार'[8]

युद्ध से तटस्थ होकर राम द्वारा शक्ति का संधान करना गांधी जी की संघर्ष–विराम–संघर्ष नीति का ही प्रतिबिंब प्रतीत होता है। दूधनाथ सिंह भी कहते है कि–''कही–कही इस कविता में राम के माध्यम से निराला की राष्ट्रीय गुलामी से मुक्ति की चिंता झलक मारती है'।[9](निराला : आत्महंथा आस्था : दूधनाथ सिंह)

सत्य–असत्य, धर्म–अधर्म के शाश्वत संघर्ष के नायक राम–शक्ति–पूजा में राम–रावण का संघर्ष है । लेकिन यह राम और रावण नाम के दो व्यक्तियों का संघर्ष न होकर रामत्व और रावणत्व का संघर्ष नजर आता है। यहाँ रामत्व का अर्थ उन गुणों की समष्टि से है जो हर युग में धर्म और सत्य

के पक्ष में खड़े होते हैं जबकि रावणत्व उन अवगुणों का समुच्चय है जो हर देश काल में अधर्म और असत्य के साथ दिखाई पड़ता है–

'रावण, अधर्मरत भी, अपना, मैं हुआ अपर–
यह रहा शक्ति का खेल समर, शंकर– शंकर'[10]

इतना ही नही निराला के राम शक्ति का संधान कर,विजय का आशीर्वाद प्राप्त कर इस संघर्ष में अपनी विजय भी सुनिश्चित करते है द

'होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन,
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन'[11]

निराला के राम की दार्शनिक व्याख्य– निराला ने जहाँ छायावादी दर्शन के प्रभाव के कारण 'राम की शक्तिपूजा' कविता में अपने आत्म–संघर्ष की अभिव्यक्ति कीय स्वछंतावादी दर्शन के प्रभाव से राम के ईश्वरीय रूप का मानवीयकारण किया, वही निराला नव–वेदांत दर्शन से भी प्रभावित थे। स्वामी विवेकानंद के प्रभाव में उनकी स्पष्ट मान्यता है कि संपूर्ण जगत ईश्वर की ही अभिव्यक्ति है। वह शंकराचार्य और कबीर की तरह जगत को मिथ्या न मानकर जगत से परे ईश्वर की खोज नहीं करते, बल्कि जगत को ही ईश्वर के रूप में देखते हैं। कविता में राम शक्ति की मौलिक कल्पना प्रकृति के इसी ईश्वरीकरण पर ही आधारित है–

'देखो, बंधुवर, सामने स्थित जो यह भूधर
शोभित शत–हरित–गुल्म–तृण से श्यामल सुंदर,
पार्वती कल्पना है इसकी, मकरंद–विन्दूय
गरजता चरण–प्रांत पर सिंह वह, नहीं सिंधु'[12]

'कृतिवास रामायण' व 'राम की शक्तिपूजा' के राम में अंतर–निराला ने 'कृतिवास रामायण' की कथा के एक अंश को अपनी कविता का आधार बनाया, किंतु अपनी कल्पना शक्ति से उन्होंने उसमें कई अंतर पैदा कर दिए हैं। जहाँ 'कृतिवास' के 'राम' बांग्ला भावुकता से युक्त है, वही 'राम की शक्तिपूजा' के राम अनियंत्रित भावना के स्थान पर आत्म–अनुशासन से युक्त भावुकता का प्रदर्शन करते हैं। 'कृतिवास रामायण' में हनुमान प्रसंग उपस्थित नहीं है, जबकि निराला की 'शक्तिपूजा' में राम के साथ हनुमान की शक्ति भी है। कृतिवास रामायण में जहाँ राम की शक्ति पारंपरिक रूप में उपस्थित है, वहीं 'शक्तिपूजा' में राम शक्ति की कल्पना प्रकृति के रूप में करते हैं। कृतिवास रामायण में राम शक्ति की पूजा भक्ति या उपासना पद्धति से करते हैं, जबकि 'शक्तिपूजा' में हठयोग क्रिया का सहारा लेते हैं। कृतिवास रामायण में शक्ति राम के पक्ष से संयुक्त होती है, लेकिन शक्तिपूजा में वह राम के मुख में लीन होती है। डॉ. बच्चन सिंह भी कहते है कि– 'शक्तिपूजा' का मूल स्रोत कृतिवास का 'बांग्ला रामायण' है। किंतु 'बांग्ला रामायण' की कथा में वर्णन की स्थूलता, अर्थ का एकहरापन और बंगाली भावुकता है। निराला की 'राम की शक्तिपूजा, में सूक्ष्मता के अनेक स्तरों पर विचरण करने वाली अर्थ–योजना हिंदी प्रदेश का संयम और पौरुष है। 'बांग्ला रामायण' जितना बहुमुखी है, 'राम की शक्तिपूजा, उतनी ही अंतर्मुखी'[13] (हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह)

तुलसी के राम और निराला के राम में अंतर–गोस्वामी तुलसीदास जी निराला के सबसे प्रिय कवि हैं। राम का चरित्र उन्हें तुलसीदास जी से ही मिला है। उन्हीं का अनुसरण करते हुए उन्होंने 'राम की शक्तिपूजा' कविता का नायक श्री राम को बनाया। परंतु फिर भी आधुनिक कवि होने के नाते निराला के राम और तुलसी के राम में बहुत सारे अंतर दिखाई देते हैं। जहाँ– तुलसी के राम मर्यादा पुरुषोत्तम राम है, वही निराला के राम नवीन पुरुषोत्तम हो गए हैं। तुलसी के राम ईश्वर के अवतार हैं, जबकि निराला के राम मानव । तुलसी के राम में संशय, विकल्पता आदि मानवोचित्त कमजोरियाँ अनुपस्थित है, वही निराला के राम में यह उपस्थित है। तुलसी के राम सीता से प्रेम करते हैं, पर एक बार कर उठते हैं– 'नारी हेतु प्रिय बंधू गवाई' वही निराला के राम सीता की मुक्ति को प्रिया की मुक्ति मानते हैं– 'जानकी हाय, उधर प्रिया का हो न सका' ।

इस प्रकार हम देखते है कि निराला ने अपनी सृजनात्मक एवं रचनात्मक प्रतिभा से राम के मिथक का इस प्रकार प्रयोग किया की वह कई सूत्रों से जुड़ गया। साथ ही वह पाठकों व समीक्षकों और स्वयं निराला के भावों की आत्म–अभिव्यक्ति का माध्यम भी बन सका ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अनामिका कविता संग्रह, द्वितीय संस्मरण 2005: निराला, भारती–भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद पृष्ठ 150–151।
2. वही पृष्ठ 163 ।
3. वही पृष्ठ 119–120 ।
4. वही पृष्ठ 149 ।
5. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,सत्रहवाँ संस्मरण 2023 : बच्चन सिंह,राधा कृष्ण प्रकाशन पृष्ठ 352 ।
6. अनामिका कविता संग्रह, द्वितीय संस्मरण 2005, भारती–भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद पृष्ठ 163 ।
7. निराला काव्य की छवियाँ : नन्द किशोर नवल पृष्ठ 94 ।
8. अनामिका कविता संग्रह, द्वितीय संस्मरण 2005, भारती–भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद पृष्ठ 150–151 ।
9. निराला रू आत्महंथा आस्था : दूधनाथ सिंह पृष्ठ 108 ।
10. अनामिका कविता संग्रह, द्वितीय संस्मरण 2005, भारती–भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद पृष्ठ 158 ।
11. वही पृष्ठ 165 ।
12. वही पृष्ठ 160–161 ।
13. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, सत्रहवाँ संस्मरण 2023 : बच्चन सिंह, राधा कृष्ण प्रकाशन पृष्ठ 352 ।

****